1
दर्शन मित्र

|Justice (न्याय)| — By Alastair V. Campbell

न्याय एक ऐसा विषय (concept) है जिसकी समझ बचपन से ही बनने लगती है। एक अभिभावक ज्यादातर उनके बच्चों को यह शिकायत करते हुए पाते हैं " It is not fair " ("यह ठीक नहीं है।") 'न्याय' को 'निष्पक्षता' (fairness) के रूप में देखने (पक्षपात का अर्थ है कि जब तक कि भेदभाव पूर्ण व्यवहार करने के लिए कोई ठोस अंतर नहीं नजर आए सभी को एकसमान ही ट्रीट करें। तो जब बच्चा ऐसा कहता है कि 'It is not fair' उसका इशारा उनके साथ हुए किसी भेदभाव से ही होता है।

न्याय की ऐसी ही अवधारणा को सामने रखते हुए कैम्पबेल अपनी किताब 'बायोएथिक्स - द बेसिक्स' के पाठ 'न्याय' (जस्टिस) की शुरुआत करते हैं। वह आगे लिखते हैं कि जस्टिस को विभिन्न रूपों में अलग-अलग क्षेत्र में देखा जा सकता है। जैसे- क्रिमिनल जस्टिस, सिविल जस्टिस, सोशल जस्टिस, और डिस्ट्रिब्युटिव जस्टिस। इनमें से कैम्पबेल सोशल जस्टिस और डिस्ट्रिब्युटिव जस्टिस का अपने पाठ में अवलोकन करते हैं, क्योंकि इन दोनों को ही बायोएथिक्स के क्षेत्र से जोड़ा जा सकता है।

सोशल जस्टिस (सामाजिक न्याय) सामाजिक कल्याण (social welfare) और व्यक्तिक अधिकार (individual rights) के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करती है। वहीं डिस्ट्रिब्युटिव जस्टिस (विभाजन करने संबंधी न्याय / वितरण न्याय प्रणाली) की कोशिश समाज में लाभ और जिम्मेदारियों का निष्पक्ष बंटवारे की होती है।

कैम्पबेल 'जस्टिस' को दो भागों में विभाजित करके पाठ को समझा जा सकता है, एक पब्लिक हेल्थ से जुड़ी सुविधाओं में सामाजिक न्याय प्रणाली कैसे काम करती है और दूसरा, वितरण न्याय प्रणाली (बायोएथिक्सम) बनाए रखने में सामने आने वाली तीन मुख्य समस्याएं — ① स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच (Access to health)

विश्वव्यापी

2 स्वास्थ्यलाभों में ग्लोबल असमानता (Global Inequalities), और ग्लोबल सर्वाइवल सार्वभौमिक अतिजीवन (Global survival) कैसे सुलझाई जा सकती है।

(पब्लिक हेल्थ एथिक्स)

सामाजिक स्वास्थ्य सम्बन्धी नैतिकताएँ 19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में कॉलेरा के फैलने से आये बदल के दौरान जन्म लिया। वैज्ञानिक जांच में बीमारी के कारणों का संबंध कई सामाजिक कारकों से भी पाया गया। इसी दौरान ~~किस 1850~~ 10 देखा गया कि किस प्रकार के सामाजिक सुधारवादी कार्यों से स्वास्थ्य संबंधी लाभ पहुंचाया जा सकता है, और यही पब्लिक हेल्थ एथिक्स का विषय भी है। इसमें यह अवलोकन किया जाता है कि बीमारी रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए बने पॉलिसी और प्रोग्राम के क्या नैतिक पहलू हैं। इन सबके दौरान संपूर्ण समाज के लाभ व भले के लिए कहाँ तक व्यक्ति के अधिकारों और स्वतंत्रता पर बंधन लगाया जाता है।

सामाजिक न्याय (Social Justice) से संबंधी कैसी समस्याएं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सामने आती हैं, कैम्पबेल ने दो उदाहरणों से समझाया एक तो रोकथाम से जुड़े प्रोग्राम (preventive medicine) दूसरा स्वास्थ्य लाभ व जागरूकता के लिए चलाए जाने वाले प्रोग्राम (health promotion) इनके अंतर्गत की गई चर्चा को संक्षेप में ऐसे दर्शाया जा सकता है।

सामाजिक न्याय (social Justice) से जुड़े सवाल
संपूर्ण समाज के भले और व्यक्तिगत अधिकारों के बीच सामंजस्य

रोकथाम संबंधी उपचार (Preventive medicine)	स्वास्थ्य लाभ को बढ़ावा (health Promotion)
• Screening (जांच)	• persuation (समझाना)
• vaccination & Immunization (टीकाकरण) (संरक्षण)	• legel (कानून)
• Pandemic control (महामारी पर नियंत्रण)	• education (शिक्षा)

Date / /
Page (3)

Preventive Medicine → रोकथाम मेडिसिन कई मानदंडों का प्रयोग करती है, जिससे बीमारी को फैलने से रोका जा सके और उसे नियंत्रित किया जा सके। उनमें से तीन मुख्य तौर पर हैं — जाँच (Screening), टीका टीकाकरण (immunization and vaccination) और बीमारी के बारे में अनिवार्य रूप से अवगत कराना और संक्रमित लोगों की आवाजाही पर रोक लगाना (compulsory notification of disease and control on the movement of infected people)।

3 दृष्टि मित्र

(1) स्क्रीनिंग (जांच) में यह देखा जाता है कि कोई व्यक्ति किसी बीमारी से पीड़ित तो नहीं है या फिर उसे रोग होने का खतरा तो नहीं है या कोई रोग उसके होने वाले बच्चे को तो नहीं हो जाएगा। इसे गर्भ के दौरान और बच्चा जन्म देने के बाद दोनों ही समय किया जाता है इसमें आधार जेनेटिक (आनुवंशिक) बीमारियाँ और डाउन सिंड्रोम, (PKU) फिनाइलकिटोनुरिया संबंधी जांच होती है युवाओं में ब्रेस्ट कैंसर, सिस्टिक फाइब्रोसिस जैसे रोगों से संबंधित जांच की जाती है। स्क्रीनिंग से जुड़ी नैतिक परेशानी यह है कि टेस्ट हमेशा 100% सही हो जरूरी नहीं है। और दूसरा इन्हें अनिवार्य बनाया जाए या व्यक्ति पर छोड़ दिया जाए कि वह इन्हें कराना चाहता है या नहीं। कई देशों में PKU का टेस्ट अनिवार्य है क्योंकि इसका संतुलित भोज्य पदार्थों द्वारा ठीक किया जा सकता है और इलाज न होने पर मानसिक क्षति व पागलपन तक हो सकता है। पर कुछ टेस्टों का क्या जो 'फॉल्स पॉजिटिव' होते हैं, यानि व्यक्ति को वह रोग होने की संभावना नहीं है या फिर 'फॉल्स नेगेटिव' यानि व्यक्ति पीड़ित है फिर भी टेस्ट में इसका पता नहीं चल पाया। इसके सत प्रतिशत सही न होने के कारण इसे अनिवार्य करने के बजाय व्यक्ति के ऊपर छोड़ देना बेहतर

लगता है जहां उनको इसके फायदों के बारे में संपूर्ण जानकारी दे दी जाए।

(2) दूसरे जस्टिस से जुड़े हुए प्रश्न टीकाकरण और इम्युनाइजेसन के प्रोसेस पर खड़े होते हैं।

वैक्सिन के ज़रिए मृत या जीवित कम क्षमता के जर्म डालते हैं जो किसी विशेष प्रकार की बीमारी जैसे टेटनस, चिकन पॉक्स का कारण होते हैं। जब यह वैक्सिन दी जाती है तो शरीर में एंटीबायोटिक बनने लगते हैं जो इनके खिलाफ लड़ते हैं। इस तरह शरीर में उस रोग के प्रतिरोधी क्षमता का विकास हो जाता है, पर वैक्सिनेसन कोई गारंटी नहीं होता है कि वह बीमारी नहीं होगी।

प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता तो तभी विकसित होती है, जब व्यक्ति उस बीमारी से एक बार ठीक हो चुका होता है, पर कई व्यक्तियों में टीकाकरण प्रभावी देखा गया और किसी रोग को जड़ से खत्म करने के लिए एक प्रभावी तरीके के तौर पर सामने भी आया।

वैक्सिनेसन के साथ भी नैतिक प्रश्न यही है कि इसे अनिवार्य किया जाए या व्यक्तिगत इच्छा पर छोड़ दिया जाए। ऐसा बहुत ही कम मामलों में होता है कि टीकाकरण का नकारात्मक प्रभाव पड़े और ना के बराबर ऐसे केस सामने आते हैं कि इसका प्रभाव खतरनाक रहा हो, जबकि अगर इसे अनिवार्य न किया जाए और बहुत से अभिभावक इसे अपने बच्चों को लगवाने से मना कर दें तो यह 'Herd Immunity' के लिए खतरा है।

इस तरह यहां साफ तौर पर व्यक्तिक अधिकार और सामाजिक भले के बीच एक संघर्ष की स्थिति नजर आती है।

(3) तीसरा महामारी से रोकथाम (Pandemic Control) के समय भी सामाजिक न्याय (Social Justice) को बनाए रखने का प्रश्न हेल्थ केयर प्रोवाइडरस के सामने खड़ा होता है।

5

~~$(x)\{(B_x \vee W_x) \supset [(A_x \vee F_x) \supset S_x]\}$~~

~~$/\therefore (x)\{B_x \supset (A_x \supset S_x)\}$~~

बीमारी कोई देश की सीमा देख कर नहीं आती वह विश्वव्यापी भी हो सकती है। (जैसे SARS) ऐसी स्थिति में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कई प्रतिबंध लगाने पड़ते हैं इनमें से कुछ आगंतुकों के स्वास्थ्य जांच, तापमान की जांच संबंधी कागजात मुहैया कराने पर ही देश में आने की स्वीकृति से जुड़े हैं। वहीं संक्रमित व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों से अलग एकाकी स्थान पर रखा जा सकता है वहीं सरकार द्वारा जनहित के हेतु केयर प्रोवाइडर पर मरीजों की जानकारी सार्वजनिक करने का नोटिस भी दिया जा सकता है जिससे संक्रमित व्यक्तियों की आवाजाही पर रोक लगायी जा सके और संक्रमण को बढ़ने से रोका जा सके।

इस तरह इन तीनों ही उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि व्यक्तिक स्वतंत्रता ~~को~~ ही (individual autonomy) एकमात्र बायोएथिक्स का सिद्धांत स्थापित नहीं किया जा सकता। कई बार जनहित के लिए इस स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने की आवश्यकता जान पड़ती है। दुविधा भरे प्रश्न यह है कि इस अंकुश का क्या नकारात्मक प्रभाव हो सकता है, और कितना प्रतिबंध व्यक्ति की स्वतंत्रता पर ठीक होगा। लाभ और हानि के बीच एक सामंजस्य बना कर चलना जरूरी होगा, ताकि महामारी की रोकथाम के लिए व्यक्ति पर अन्यायपूर्ण रोक ना लगा दी जाए।

दर्शन मित्र

Health Promotion

इसी तरह का तनाव स्वतंत्रता और नियंत्रण के बीच स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले प्रयासों में भी नजर आता है। चीन में बढ़ती जनसंख्या और उसके कारण स्वास्थ्य पर पड़ते विपरीत प्रभाव को रोकने के लिए सरकार ने 'एक बच्चा' पॉलिसी लागु कर दी। इस तरह के नियंत्रण का नकारात्मक प्रभाव यह पड़ा कि बेटे की चाह में और एक संतान के नियम के कारण गर्भपात ज्यादा कराये जाने लगे। पुरुष व स्त्री संख्या का अनुपात बिगड़ गया। कई देशों में ऐसे ही स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए कई कानूनी नियम है जैसे कार सीट बेल्ट से संबंधित, दुपहिया वाहन पर हेलमेट से संबंधित ताकि लोगों को गंभीर चोटों और उस पर खर्च होने की राशि को बचाया जा सके। इसी तरह विज्ञापन के द्वारा भी लोगों को उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली चीजों के बारे में अवगत कराया जाता है जैसे स्मोकिंग के हानिकारक प्रभाव व उससे होने वाली बीमारियों का सिगरेट के पैकेट पर दिखाया जाना। इनके अलावा हेल्थ एजुकेशन से भी लोगों को उनकी आदतों में बेहतर स्वास्थ्य के लिए बदलाव को लेकर जागरूक किया जाता है।

इस तरीके से हम देखते है कि सोशल जस्टिस या तो लोगों पर दबाव या समझाने का तरीका अपनाकर सभी के भले के लिए काम करती है।

Distributive Justice
(वितरण संबंधी न्याय)

उपलब्ध संसाधनों, लाभ अधिकारों को समान रूप से बंटवारा। कैम्पबेल डिस्ट्रिब्यूटिव जस्टिस की चर्चा निम्न तीन श्रेणियों के अंतर्गत करते हैं:

1. Access to health resources
   स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच
2. Global Inequity in health
   स्वास्थ्य में विश्वव्यापि असमानता
3. Global Survival
   सार्वभौमिक अतिजीवन